# MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY OF JOURNALISM AND COMMUNICATION

## // UNIVERSITY LIBRARY //

## -: NEWS CLIPPING SERVICE -:

## DATE :- 23 AUGUST, 2025

# MCU NEWS

# ऐसी कहानियां लिखें जो मनोरंजन करें : विपुल के. रावल

## सिनेमा की अधिकतर कहानियों में रामकथा की प्रेरणा : अनंत विजय

सत्ता सुधार ■ भोपाल

सिनेमा की विभिन्न विधाओं में लिखने वाले लेखक देश को देखने और समझने के बाद ही अलग-अलग विषयों का समावेश कहानियों में करते हैं।

हमारे देश में कहानियों और उनके विषयों की कोई कमी नहीं है। समाज में अलग-अलग दौर में फिल्मों की कहानियां कैसे लिखी गई हैं, इसे पिछले अनेक दशकों की फिल्मों को देखकर समझा जा सकता है। यह विचार आज माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के 'अभ्युदय' के अंतिम दिन 'रुस्तम' तथा 'इकबाल' जैसी चर्चित फिल्मों के पटकथा लेखक विपुल के. रावल ने व्यक्त किए। सत्रारंभ के अंतिम दिन वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय, बृजेश कुमार, बालकृष्ण एवं अदिति राजपूत ने विभिन्न सत्रों में विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

पटकथा लेखक, निर्माता एवं निर्देशक रावल ने भारतीय फिल्म उद्योग और वैश्विक सिनेमा के विकास की यात्रा पर चर्चा करते हुए फिल्म लेखन के क्षेत्र में आ रहे महत्वपूर्ण बदलावों को रियल लाइफ से जुड़े विषयों की कहानियों के साथ प्रस्तुत करते हुए लेखन एवं तकनीक के अन्तरसम्बन्धों पर चर्चा की। सत्र में उपस्थित वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय ने कहा कि फिल्मों की कहानियां हमारी भावनाएं ही होती हैं। अगर हम गौर से देखेंगे तो पाएंगे कि सिनेमा की अधिकतर कहानियों में रामकथा की प्रेरणा होती है, क्योंकि रामकथा हमारे मन में रची-बसी है। उन्होंने कहा कि विभिन्न जन माध्यमों में आज फिल्म समीक्षा किसी फिल्म की व्याख्या बनकर रह गई है, उसमें विश्लेषण एवं विवेचना का अभाव स्पष्ट झलक रहा है। विद्यार्थियों को इसे समझना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि फिल्म रिव्यू राइटिंग के लिए कहानी में डीप डाइव करना जरूरी है। उन्होंने बताया कि लोक की विराट जानकारी अगर हमें होगी तो बेहतरीन समीक्षाएं लिख सकेंगे। एक अन्य सत्र में नेटवर्क 18 के वरिष्ठ संपादक डॉ. बृजेश कुमार सिंह ने कहा कि तीन दशक पहले प्रिंट रेडियो का दौर था। उस समय टीवी पर महज कुछ समाचार बुलेटिन आते थे। उन्होंने कहा कि वर्ष 2000 के बाद से जिस तरह डिजिटल का दौर शुरु हुआ उसमें प्रिंट मीडिया ने भी खुद को री-इन्वेंट किया और कन्वर्जेंस के हिसाब से खुद को अनुकूल किया।

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY
SATTA SUDHAR 23-08-2025

स्वदेश ज्योति

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि के सत्रारंभ कार्यक्रम अभ्युदय का समापन

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY

# सिनेमा की अधिकतर कहानियों में रामकथा की प्रेरणा: अनंत विजय

## ऐसी कहानियां लिखें जो मनोरंजन करें: विपुल के. रावल

स्वदेश ज्योति संवाददाता, भोपाल

सिनेमा की विभिन्न विधाओं में लिखने वाले लेखक देश को देखने

और समझने के बाद ही अलग-अलग विषयों का समावेश कहानियों में करते हैं। हमारे देश में कहानियों और उनके विषयों की कोई कमी नहीं है। समाज में अलग-अलग दौर में फिल्मों की कहानियां कैसे लिखी गई हैं, इसे पिछले अनेक दशकों की फिल्मों को देखकर समझा जा सकता है। यह विचार शुक्रवार को माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के अभ्युदय के अंतिम दिन रुस्तम तथा इकबाल जैसी चर्चित फिल्मों के पटकथा लेखक विपुल के. रावल ने व्यक्त की। सत्रारंभ के अंतिम दिन वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय, बृजेश कुमार, बालकृष्ण एवं अदिति राजपूत ने विभिन्न सत्रों में विद्यार्थियों को संबोधित किया। पटकथा लेखक श्री रावल ने भारतीय फिल्म उद्योग और वैश्विक सिनेमा के विकास की यात्रा पर चर्चा करते हुए फिल्म लेखन के क्षेत्र में आ रहे महत्वपूर्ण बदलावों को रियल लाइफ से जुड़े विषयों की कहानियों के साथ प्रस्तुत करते हुए लेखन एवं तकनीक के अन्तरसम्बन्धों पर चर्चा की। सत्र में उपस्थित वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय ने कहा कि फिल्मों की कहानियां हमारी भावनाएं ही होती हैं। अगर हम गौर से देखेंगे तो पाएंगे कि सिनेमा की अधिकतर कहानियों में रामकथा की प्रेरणा होती है, क्योंकि रामकथा हमारे मन में रची-बसी है। उन्होंने कहा कि विभिन्न जन माध्यमों में आज फिल्म समीक्षा किसी फिल्म की व्याख्या बनकर रह गई है, उसमें विश्लेषण एवं विवेचना का अभाव स्पष्ट झलक रहा है। विद्यार्थियों को इसे समझना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि फिल्म रिव्यू राइटिंग के लिए कहानी में डीप डाइव करना जरूरी है। उन्होंने बताया कि लोक की विराट जानकारी अगर हमें होगी तो बेहतरीन समीक्षाएं लिख सकेंगे। एक अन्य सत्र में नेटवर्क 18 के वरिष्ठ संपादक डॉ. बृजेश कुमार सिंह ने कहा कि तीन दशक पहले प्रिंट रेडियो का दौर था। उस समय टीवी पर महज कुछ समाचार बुलेटिन आते थे। उन्होंने कहा कि वर्ष 2000 के बाद से जिस तरह डिजिटल का दौर शुरु हुआ उसमें प्रिंट मीडिया ने भी खुद को री-इन्वेंट किया और कन्वर्जेंस के हिसाब से खुद को अनुकूल किया।

## मीडिया के विद्यार्थियों को नए कानून के बारे में जानना जरूरी

इस सत्र में उपस्थित अधिवक्ता शिखा छिब्बर ने भारतीय न्याय संहिता के नवीन पहलुओं पर अपना संबोधन दिया। उन्होंने कहा कि नए कानूनों का उद्देश्य हर आम आदमी को न्याय देना है। उन्होंने बताया कि मीडिया के विद्यार्थियों के लिए नए कानूनों और उनके प्रावधानों का जानना बहुत जरूरी है। विश्वविद्यालय की पूर्व छात्रा और वर्तमान में कालिंदी कॉलेज, नई दिल्ली की एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. निधि अरोड़ा ने विश्वविद्यालय से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि सफलता हमेशा आपका साथ देगी जब आप पूरी सामथ्र्य से उसे करेंगे। सिनेमा अध्ययन विभाग की पूर्व छात्रा और फिल्मकार सरिता चौरसिया ने फिल्म की दुनिया में कॅरियर कैसे शुरू करना और विश्वविद्यालय से जुड़े अपने अनुभवों पर अपने विचार रखे। समापन सत्र में मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष अशोक पांडे ने कहा कि अधिकार एवं कर्तव्य एक साथ होते हैं, सत्य को समाज के सामने बिना किसी रंग के रखना पत्रकारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज के धर्म का पालन करना पत्रकारों का उत्तरदायित्व है।

### गलत सूचनाओं ने बढ़ाई फैक्ट चैकिंग

इस सत्र के मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार बालकृष्ण ने मीडिया की विश्वसनीयता और ब्रॉडकास्टिंग पर अपने वक्तव्य में बताया कि किस तरह गलत सूचनाओं ने मीडिया में फैक्ट चैकिंग की मांग बढ़ाई है। उन्होंने कहा कि किस तरह डिजिटल फ्रॉड देश भर में बढ़ रहे हैं। अपने व्याख्यान में उन्होंने मीडिया में विजुअल इन्वेस्टिगेशन और फैक्ट चेकिंग पर बात करते हुए युवा तकनीक के साथ जुड़े रहें। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की पूर्व छात्रा एवं एनडीटीवी की एंकर अदिति राजपूत ने कहा कि मीडिया आज एक शक्तिशाली उपकरण है इसमें समाज को परिवर्तन करने की शक्ति है पर निश्चित तौर पर इसके कुछ उत्तरदायित्व भी हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से अध्ययन पर जोर देने और नए कौशल सीखने की बात कही। सेंसर टेक्नालॉजी पर अपनी बात रखते हुए ड्रोन टेक्नालाजी विशेषज्ञ चिराग जैन ने कहा कि मीडिया क्षेत्र से जुड़ी तकनीक का बेहद विकास हुआ है। प

### विशेषज्ञों के गुरू मंत्र जीवन भर आएंगे काम

इस अवसर पर कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि हमारे जीवन में कदम कदम पर हमें चौंकाता है। जीवन चमत्कृत करने वाली कई घटनाओं से भरा हुआ होता है। उन्होंने कहा कि सत्रारंभ में आए विशेषज्ञों के दिए गुरु मंत्र विद्यार्थियों के लिए जीवन भर काम आने वाले हैं। उन्होंने आह्वान किया कि आगामी 20 वर्षों में देश स्वाधीनता के 100 वर्ष पूरे करेगा और इस दौरान विकसित भारत का स्वप्न युवा विद्यार्थियों के योगदान से ही पूरा हो सकता है। सत्रारंभ के तीसरे दिन सिनेमा अध्ययन विभाग के सत्र के दौरान वर्ष 2025 में फिल्म प्रोडक्शन के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उत्सव ठाकुर को स्व. अनिल चौबे स्मृति पदक एवं 21000 रुपये की राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर श्रीमती आराधना चौबे उपस्थित थीं। विभिन्न सत्रों का संचालन डॉ. गजेन्द्र अवास्या, डॉ. सुनीता द्विवेदी द्वारा किया गया। इस दौरान विभागाध्यक्ष प्रो. पवित्र श्रीवास्तव, डॉ. मोनिका वर्मा, प्रो. मनीष माहेश्वरी एवं समस्त विभागाध्यक्ष, शिक्षक एवं अधिकारी उपस्थित थे। अंत में आभार विश्वविद्यालय की कुलसचिव प्रोफेसर पी. शशिकला ने किया।

आयोजन | पत्रकारिता विश्वविद्यालय में सत्रारंभ कार्यक्रम अभ्युदय का समापन

# ऐसी कहानियां लिखें जो मनोरंजन करे : रावल

भोपाल, 22 अगस्त. सिनेमा की विभिन्न विधाओं में लिखने वाले लेखक देश को देखने और समझने के बाद ही अलग-अलग विषयों का समावेश कहानियों में करते हैं. हमारे देश में कहानियों और उनके विषयों की कोई कमी नहीं है.

समाज में अलग-अलग दौर में फिल्मों की कहानियां कैसे लिखी गई हैं, इसे पिछले अनेक दशकों की फिल्मों को देखकर समझा जा सकता है. यह विचार शुक्रवार को माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के अभ्युदय के अंतिम दिन रुस्तम तथा इकबाल जैसी चर्चित फिल्मों के पटकथा

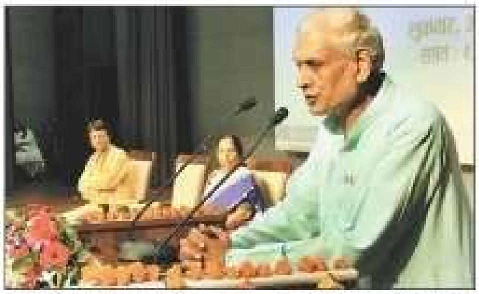

लेखक विपुल के. रावल ने व्यक्त किए. सत्रारंभ के अंतिम दिन वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय, बृजेश कुमार, बालकृष्ण एवं अदिति राजपूत ने विभिन्न सत्रों में विद्यार्थियों को सम्बोधित किया.

पटकथा लेखक, निर्माता एवं निर्देशक रावल ने भारतीय फिल्म उद्योग और वैश्विक सिनेमा के विकास की यात्रा पर चर्चा करते हुए फिल्म लेखन के क्षेत्र में आ रहे महत्वपूर्ण बदलावों को रियल लाइफ से जुड़े विषयों की कहानियों के साथ प्रस्तुत करते हुए लेखन एवं तकनीक के अन्तरसम्बन्धों पर चर्चा की. समापन सत्र में मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष अशोक पांडे ने कहा कि अधिकार एवं कर्तव्य एक साथ होते हैं, सत्य को समाज के सामने बिना किसी रंग के रखना पत्रकारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है. समाज के धर्म का पालन करना पत्रकारों का उत्तरदायित्व है इस अवसर पर कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि हमारे जीवन में कदम कदम पर हमें चौंकाता है. जीवन चमत्कृत करने वाली कई घटनाओं से भरा हुआ होता है.

एक अन्य सत्र में वरिष्ठ पत्रकार डॉ. बृजेश कुमार सिंह ने कहा कि आज डिजिटल मीडिया तेजी से बढ़ रहा है और इसने दूसरे माध्यमों को कड़ी प्रतिस्पर्धा दी है. उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से घबराने की जरूरत नहीं है. डिजिटल का बाजार बहुत बढ़ेगा इसके साथ ओरिजिनल कंटेंट की मांग बढ़ेगी, विद्यार्थी अपनी स्किल्स को बेहतर करने पर ध्यान दें. मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार बालकृष्ण ने बताया कि किस तरह गलत सूचनाओं ने मीडिया में फैक्ट चेकिंग की मांग बढ़ाई है.

NAVABHARAT 23-08-2025 page 02

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY

# हमारे देश में कहानियों और उनके विषयों की कोई कमी नहीं: रावल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भोपाल

सिनेमा की विभिन्न विधाओं में लिखने वाले लेखक देश को देखने और समझने के बाद ही अलग-अलग विषयों का समावेश कहानियों में करते हैं। हमारे देश में कहानियों और उनके विषयों की कोई कमी नहीं है। समाज में अलग-अलग दौर में फिल्मों की कहानियां कैसे लिखी गई हैं, इसे पिछले अनेक दशकों की फिल्मों को देखकर समझा जा सकता है। यह विचार शुक्रवार को माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विवि के अभ्युदय के अंतिम दिन रुस्तम तथा इकबाल जैसी चर्चित फिल्मों के पटकथा लेखक विपुल के. रावल ने व्यक्त किए।

## गलत सूचनाओं ने मीडिया में बढ़ाई है फैक्ट चैकिंग की मांग

इस सत्र के मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार बालकृष्ण ने मीडिया की विश्वसनीयता और ब्रॉडकास्टिंग पर अपने वकतव्य में बताया कि किस तरह गलत सूचनाओं ने मीडिया में फैक्ट चैकिंग की मांग बढ़ाई है। उन्होंने कहा कि किस तरह डिजिटल फ्रॉड देश भर में बढ़ रहे हैं।

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY
HARIBHOOMI 23-08-2025

# एमसीयू में कार्यक्रम अभ्युदय का समापन

भोपाल।

**माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के सत्रारंभ कार्यक्रम अभ्युदय का समापन शुक्रवार को हुआ।**

समापन दिवस पर प्रसिद्ध पटकथा लेखक विपुल के. रावल ने छात्रों से कहा कि ऐसी कहानियां लिखें जो मनोरंजन करें, लेकिन जीवन की सच्चाइयों से जुड़ी हों। उन्होंने तकनीक और लेखन के तालमेल पर भी प्रकाश डाला। वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय ने कहा कि अधिकांश फिल्मों की कहानियों में रामकथा की छाया होती है, क्योंकि यह हमारी सांस्कृतिक चेतना का आधार है।

नेटवर्क 18 के वरिष्ठ संपादक डॉ. बृजेश सिंह ने डिजिटल मीडिया की बढ़ती भूमिका पर चर्चा करते हुए ओरिजिनल कंटेंट पर फोकस करने की सलाह दी। वरिष्ठ पत्रकार बालकृष्ण ने मीडिया में फैक्ट चेकिंग की आवश्यकता बताई, वहीं एनडीटीवी की एंकर अदिति राजपूत ने मीडिया के सामाजिक उत्तरदायित्व पर बल दिया। इस अवसर पर ड्रोन विशेषज्ञ चिराग जैन, अधिवक्ता शिखा छिब्बर, फिल्मकार सरिता चौरसिया व डॉ. निधि अरोड़ा ने भी अनुभव साझा किए। समापन सत्र में मुख्य अतिथि अशोक पांडे और कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने छात्रों से राष्ट्र निर्माण में योगदान का आह्वान किया।

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY

अभ्युदय एमसीयू के सत्रारंभ का समापन

# विकसित भारत के सपने को साकार करने में योगदान दें

सिटी रिपोर्टर • एमसीयू के सत्रारंभ 'अभ्युदय' का शुक्रवार को समापन हो गया। इसमें चर्चित फिल्म 'रुस्तम' व 'इकबाल' के स्क्रिप्ट राइटर विपुल के. रावल शामिल हुए। उन्होंने कहा कि लेखक को ऐसी कहानियां लिखनी चाहिए, जो समाज का मनोरंजन करें और दर्शकों के दिलों तक पहुंचें।

सिनेमा की कोई भी विधा देश और समाज को देखे बिना पूरी नहीं हो सकती, क्योंकि हमारे आसपास विषयों की कमी नहीं है। भारतीय सिनेमा की कहानियों में दशकों से बदलाव आते रहे हैं, लेकिन हर दौर की फिल्मों में समाज का ही प्रतिबिंब दिखाई देता है। वरिष्ठ फिल्म समीक्षक अनंत विजय ने कहा कि सिनेमा की अधिकतर

कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी

कहानियों में कहीं-न-कहीं रामकथा की प्रेरणा झलकती है। मुख्य अतिथि अशोक पांडेय ने कहा कि पत्रकारिता का धर्म है सत्य को बिना रंग के समाज के सामने रखना। कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि आने वाले 20 वर्षों में विकसित भारत के सपने को साकार करने में वे अपनी सृजनात्मकता से योगदान दें।

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY
DAINIK BHASKAR 23-08-2025

स्वदेश
भोपाल - संस्करण
23 Aug 2025
NEWS CLIPPING SERVICE FROM MCNUJC LIBRARY

# निर्माता, निर्देशक और लेखक फिल्मों में सेट करते हैं एजेंडा

**स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल**

वरिष्ठ पत्रकार और विख्यात फिल्म समीक्षक अनंत विजय ने कहा कि फिल्मों में निर्माता/निर्देशक/लेखक अपना एजेंडा, अपना नैरेटिव सेट करते हैं। समीक्षा में भी चीजें प्लांट होती हैं। लिफाफा जर्नलिज्म फिल्म समीक्षा में भी होता है। लिफाफे में अन्य चीजों के अलावा एक पर्ची भी होती है जिसमें लिखा होता है कि आपको किन बातों को उभारना है और किनको नजरअंदाज करना है। वो पत्रकार ही कैसा जिसका अपना व्यू न हो।

यह बात उन्होंने माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के अभ्युदय कार्यक्रम के अंतिम दिन संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि एक तरफ हम जनपक्ष की बात करते हैं और दूसरी तरफ कहते हैं कि पत्रकार का कोई पक्ष नहीं होता, ये दोनों बातें एक साथ कैसे संभव हैं। पत्रकार का देश और समाज के प्रति दायित्व होता है। आज पत्रकारों के सामने राष्ट्र को मजबूत करने का बड़ा दायित्व है। जो कहानियां आप देखते हैं उस कहानी के पीछे छिपी हुई मंशा को पकड़ना ही सबसे बड़ी फिल्म समीक्षा है और उसी से आपको अपने पाठकों से एकाकार होने का अवसर मिलता है। आज तो हालत यह है कि समीक्षक फिल्म को देखे बिना ही समीक्षा कर डालते हैं। ऐसे छद्म समीक्षकों से सावधान रहना होगा।

सत्रारंभ के अंतिम दिन कालिंदी कॉलेज, नई दिल्ली की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. निधि अरोड़ा और सिनेमा अध्ययन विभाग की पूर्व छात्रा और फिल्मकार सरिता चौरसिया ने अपने विचार रखें। समापन कार्यक्रम में सिनेमा अध्ययन विभाग के सत्र के दौरान वर्ष 2025 में फिल्म प्रोडक्शन के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उत्सव ठाकुर को स्व. अनिल चौबे स्मृति पदक एवं 21000 रुपये की राशि दी गई।

## इन वक्ताओं ने भी ये कहा..

### प्रिंट मीडिया ने भी खुद को किया री-इन्वेंट : डॉ बृजेश सिंह

नेटवर्क 18 के वरिष्ठ संपादक डॉ. बृजेश कुमार सिंह ने कहा कि तीन दशक पहले प्रिंट रेडियो का दौर था। उस समय टीवी पर महज कुछ समाचार बुलेटिन आते थे। 2000 के बाद से जिस तरह डिजिटल का दौर शुरु हुआ, उसमें प्रिंट मीडिया ने भी खुद को री-इन्वेंट किया और कन्वर्जेंस के हिसाब से खुद को अनुकूल किया।

### गलत सूचनाओं ने बढ़ाई फैक्ट चैकिंग की मांग : बालकृष्ण

मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार बालकृष्ण ने मीडिया की विश्वसनीयता और ब्रॉडकास्टिंग पर कहा कि सोशल मीडिया में तेजी से आ रहे कई गलत सूचनाओं ने मीडिया में फैक्ट चैकिंग की मांग बढ़ाई है। डिजिटल फ्रॉड देश में बढ़ रहे हैं। इसलिए पत्रकारिता के युवा तकनीक के साथ फैक्ट की जांच करें।

### प्रिंट मीडिया में बढ़ी ड्रोन तकनीक : जैन

सेंसर टेक्नालॉजी पर ड्रोन टेक्नोलॉजी विशेषज्ञ चिराग जैन ने कहा कि कुछ दशकों में यह यात्रा प्रिंट मीडिया से होती हुए बेहरीन कैमरों और ड्रोन तकनीक तक विस्तृत हो गई है। ड्रोन तकनीक का समाज में उपयोग बढ़ रहा है। इस क्षेत्र में काफी संभावनाएं हैं।

### पत्रकार नए कानून को जानें

अधिवक्ता शिखा छिब्बर ने भारतीय न्याय संहिता पर कहा कि नए कानूनों का उद्देश्य हर आम आदमी को न्याय देना है। मीडिया के विद्यार्थियों के लिए नए कानूनों और उनके प्रावधानों का जानना बहुत जरूरी है।

**INTERVIEW**
**OF THE WEEK**

**विपुल के रावल**
फिल्म लेखक

# इकबाल की स्क्रिप्ट को 17 प्रोडक्शन हाउस ने रिजेक्ट किया
# जब फिल्म बनी तो इसे मिला नेशनल अवॉर्ड

**राजेश कुमार गाबा,** भोपाल • मेरी लिखी इकबाल फिल्म की कहानी को 17 नामी प्रोडक्शन हाउस ने रिजेक्ट किया। जब फिल्म बनी तो इसे नेशनल अवॉर्ड मिला। यह कहना है नेवी ऑफिसर से फिल्म राइटर बने विपुल के रावल का। इकबाल, रुस्तम और मिशन रानीगंज जैसे चर्चित फिल्मों के लेखक विपुल की नेवी ऑफिसर से राइटर बनने की कहानी काफी दिलचस्प है। वे माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) के सत्रारंभ 'अभ्युदय-2025' में शामिल होने भोपाल आए। इस मौके पर उन्होंने सिटी भास्कर से नेवी की जॉब छोड़कर फिल्म लेखक बनने की जर्नी को शेयर की।

**• नेवी से लेकर फिल्मों तक का सफर तय किया, ये बदलाव कैसे हुआ?**

- मैं नौसेना में था। वहां का अनुशासन, टीमवर्क और कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेने की क्षमता ने मुझे बहुत कुछ सिखाया। लेकिन, हमेशा से मुझे कहानियों का शौक था। नौसेना की नौकरी छोड़कर सिनेमा की ओर कदम बढ़ाया तो यह आसान नहीं था। परिवार और दोस्तों ने सवाल किए, लेकिन मुझे पता था कि अगर मुझे अपने मन की करनी है तो यही रास्ता है।

**• नई स्क्रिप्ट लिखते समय आप सबसे पहले किस पर ध्यान देते हैं?**

- मेरे लिए किरदार सबसे अहम है। अगर किरदार असली और जमीनी होंगे तो कहानी अपने आप चलने लगेगी। मैं हमेशा सोचता हूं कि पर्दे पर दिखने वाला इंसान अगर सचमुच हमारे आस-पास होता तो कैसा होता? उसकी आदतें क्या होतीं, उसकी कमजोरी और मजबूती क्या होती? जब किरदार असल लगते हैं, तभी दर्शक कनेक्ट करते हैं।

**• रिसर्च-आधारित फिल्मों में कितनी तैयारी करनी पड़ती है?**

- बहुत ज्यादा। मिशन रानीगंज जैसी फिल्म के लिए मैंने खदानों, कोयले की खान की तकनीकी बारीकियों और रेस्क्यू ऑपरेशन की असली घटनाओं का गहराई से अध्ययन किया। रुस्तम के लिए मुझे कोर्ट केस की हर डिटेल पढ़नी पड़ी, उस दौर के अखबार, आर्काइव्ज संभालने पड़े। रिसर्च के आधार पर ही कहानी खड़ी रहती है। स्टोरी का सबसे कठिन हिस्सा, उसकी शुरुआत होती है, पहले सीन से तय हो जाता है कि दर्शक आपके साथ चलेंगे या नहीं। अगर शुरुआत कमजोर है तो फिल्म असर नहीं डालेगी।

**• रुस्तम लिखने का आइडिया कैसे आया?**

- मैं जब इस केस को पढ़ रहा था, तो मुझे लगा कि इसमें सब कुछ है- इमोशन, कोर्टरूम ड्रामा, समाज का नजरिया और इंसान की कमजोरियां। यही एक अच्छी फिल्म की बुनियाद है। मैंने सोचा कि अगर इसे पर्दे पर उतारा जाए तो दर्शक सिर्फ कहानी ही नहीं देखेंगे, बल्कि उसमें अपना अक्स भी देखेंगे। मिशन रानीगंज में भी काफी रिसर्च करनी पड़ी, चूंकि खदान की दुनिया आम लोगों के लिए अनजान है।

**• क्या हिंदी सिनेमा में लेखक को अहमियत मिल रही है?**

- पहले लेखक को पर्दे के पीछे का इंसान माना जाता था। अब हालात बदल रहे हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने लेखकों की अहमियत को बढ़ाया है। अब स्टार के साथ-साथ दर्शक ये भी पूछते हैं कि कहानी किसने लिखी है।

**• आपके आने वाले प्रोजेक्ट कौन से हैं?**

- डायरेक्टर नीरज पांडे के साथ रुस्तम-2 की स्क्रिप्ट व नेटफ्लिक्स के लिए इमरान हाशमी स्टारर कस्टम ऑफिसर्स की जिंदगी पर तस्करी की स्क्रिप्ट लिखी है। रैली ड्राइवर की जिंदगी पर रफ्तार वेब सीरीज लिखी है। अपनी नेवी अफसर की लाइफ पर किताब 'अंधे घोड़े फौज में दौड़' भी लिख रहा हूं।

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY
DAINIK BHASKAR 23-08-2025

# हमारे मन में बसी है रामकथा, इससे प्रेरित हैं सिनेमा की कहानियां : अनंत विजय

## एमसीयू सत्रारंभ कार्यक्रम 'अभ्युदय' का समापन, अंतिम दिन विपुल के. रावल समेत कई विशेषज्ञों ने रखी अपनी बात

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपाल: सिनेमा की विभिन्न विधाओं में लिखने वाले लेखक देश को देखने और समझने के बाद ही अलग-अलग विषयों का समावेश कहानियों में करते हैं। हमारे देश में कहानियों और उनके विषयों की कोई कमी नहीं है। समाज में अलग-अलग दौर में फिल्मों की कहानियां कैसे लिखी गई हैं, इसे पिछले अनेक दशकों की फिल्मों को देखकर समझा जा सकता है।

यह विचार शुक्रवार को माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) के 'अभ्युदय' के अंतिम दिन 'रुस्तम' तथा 'इकबाल' जैसी चर्चित फिल्मों के पटकथा.लेखक विपुल के. रावल ने व्यक्त की। सत्रारंभ के अंतिम दिन वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय, बृजेश कुमार, बालकृष्ण एवं अदिति राजपूत ने विभिन्न सत्रों में विद्यार्थियों को संबोधित किया। पटकथा लेखक रावल ने भारतीय फिल्म उद्योग और वैश्विक सिनेमा के विकास की यात्रा पर चर्चा करते हुए फिल्म लेखन के क्षेत्र में आ रहे महत्वपूर्ण बदलावों को रियल लाइफ से जुड़े विषयों की कहानियों के साथ प्रस्तुत करते हुए लेखन एवं तकनीक के अंतरसंबंधों पर चर्चा की। सत्र में उपस्थित वरिष्ठ पत्रकार, फिल्म समीक्षक और लेखक अनंत विजय ने कहा कि फिल्मों की कहानियां हमारी भावनाएं ही होती हैं। अगर हम गौर से देखेंगे तो पाएंगे कि सिनेमा की अधिकतर कहानियों में रामकथा की प्रेरणा होती है, क्योंकि रामकथा हमारे मन में रची-बसी है। उन्होंने कहा कि विभिन्न जन माध्यमों में आज फिल्म समीक्षा किसी फिल्म की व्याख्या बनकर रह गई है, उसमें विश्लेषण एवं विवेचना का अभाव स्पष्ट झलक रहा है। विद्यार्थियों को इसे समझना बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि फिल्म रिव्यू राइटिंग के लिए कहानी में डीप डाइव करना जरूरी है। उन्होंने बताया कि लोक की विराट जानकारी अगर हमें होगी तो बेहतरीन समीक्षाएं लिख सकेंगे।

वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय (बायें) को पुस्तक भेंट करते प्रो. पवित्र श्रीवास्तव।

### आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से घबराने की जरूरत नहीं: डा. बृजेश कुमार सिंह

एक अन्य सत्र में वरिष्ठ संपादक डा. बृजेश कुमार सिंह ने कहा कि तीन दशक पहले प्रिंट रेडियो का दौर था। उस समय टीवी पर महज कुछ समाचार बुलेटिन आते थे। उन्होंने कहा कि वर्ष 2000 के बाद से जिस तरह डिजिटल का दौर शुरु हुआ उसमें प्रिंट मीडिया ने भी खुद को री-इन्वेंट किया और कन्वर्जेंस के हिसाब से खुद को अनुकूल किया। सिंह ने कहा कि आज डिजिटल मीडिया तेजी से बढ़ रहा है और इसने दूसरे माध्यमों को कड़ी प्रतिस्पर्धा दी है। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) से घबराने की जरूरत नहीं है। डिजिटल का बाजार बहुत बढ़ेगा। इसके साथ ओरिजिनल कंटेंट की मांग बढ़ेगी, अतः विद्यार्थी अपनी स्किल्स को बेहतर करने पर ध्यान दें।

### उत्सव ठाकुर को स्व. अनिल चौबे स्मृति पदक व 21 हजार रुपये का सम्मान

समापन सत्र में मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष अशोक पांडे ने कहा कि अधिकार एवं कर्तव्य एक साथ होते हैं। सत्य को समाज के सामने बिना किसी रंग के रखना पत्रकारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज के धर्म का पालन करना पत्रकारों का उत्तरदायित्व है। सत्रारंभ के तीसरे दिन सिनेमा अध्ययन विभाग के सत्र के दौरान वर्ष 2025 में फिल्म प्रोडक्शन के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उत्सव ठाकुर को स्व. अनिल चौबे स्मृति पदक एवं 21 हजार रुपये की राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर आराधना चौबे उपस्थित थीं।

NEWS CLIPPING SERVICE
FROM MCNUJC LIBRARY
NAVADUNIA 23-08-2025